UP Board Notes Class 6 Hindi Chapter 21 आओ फिर से दिया जलाएँ (मंजरी)

भरी दुपहरी ..... दिया जलाएँ।

शब्दार्थ – अँधियारा-अँधेरा, अन्तरतम-अंतर्मन, हृदय।

संदर्भ एवं प्रसंग – प्रस्तुत काव्य पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक मंजरी-8 में संकलित अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा रचित कविता 'आओ फिर से दिया जलाएँ' कविता से उद्धृत हैं। प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में कवि युवाओं को जीवन की कठिनाइयों का सामना करने एवं लक्ष्य प्राप्ति हेतु संघर्षरत रहने की प्रेरणा दे रहा है।

व्याख्या – कवि कहता है युवावस्था में व्यक्ति स्वस्थ शक्तिशाली और जोश से भरा होता है। इस उम्र में जीवन की कठिनाइयों से निराश होकर हार नहीं मानना चाहिए। उन्होंने युवाओं की तुलना सूर्य से करते हुए कहा है कि युवाओं का जीवन की कठिनाइयों के आगे हारना ऐसे है जैसे सूरज का परछाई से हार जाना। इसलिए हमें अपने अंतरतम के नेह (तेल) को निचोड़कर यानी अपनी सारी इच्छा शक्ति को समेटकर आशा के बुझे हुए दीप की बाती को सुलगाना होगा और उम्मीद का दिया फिर से जलाना होगा।

हम पड़ाव को ..... दिया जलाएँ।

संदर्भ एवं प्रसंग – पूर्ववत ।

प्रसंग – कवि कहता है यदि पड़ाव यानी मामूली उपलब्धि को ही मंजिल समझकर यदि हम रुक जाएँगे तो जो जीवन का वास्तविक लक्ष्य है, वह आँखों से ओझल हो जाएगी यानी हम अपना वास्तविक लक्ष्य या ध्येय भूल, जाएँगे। इसलिए वर्तमान के मोहजाले में आकर आनेवाले कल को नहीं भूलना चाहिए यानि वर्तमान की खुशियों को जीते हुए भविष्य की बेहतरी की तैयारी भी करते रहना चाहिए। अभी आहुति बाकी है, इसलिए यज्ञ भी अधूरा है अर्थात अपनों के साथ हम इतने व्यस्त हो गए हैं कि पूरी मानवता के बारे में सोचना भूल गए हैं। पूरी मानवता का कल्याण यज्ञ स्वरूप है जिनमें हमारे बलिदानों, कर्तव्यों की आहुति जानी बाकी है। इसलिए दुखों एवं बुराइयों पर विजय के लिए हमें अपना आत्मोत्सर्ग वैसे ही करना है जैसे दधीचि ने देवताओं की विजय के लिए वज्र बनाने हेतु अपनी हड्डयाँ दान में दे दी थीं।

https://www.evidyarthi.in/